Dr.Raman Kumar Thakur

Assistant professor (Guest) Department of Economics,D.B.College, Jaynagar, Madhubani.

Class: -B.A.part -1 (Hons.)

Date:- 22.10. 2020.Lecture n.-23.

*** उपभोक्ता अतिरेक की मान्यताये(Assumptions of Consumar's Surplus.) :- उपभोक्ता अतिरेक की मान्यताएं इस प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है:-**

1) प्रोफेसर मार्शल का मानना है कि मुद्रा की सीमांत उपयोगिता स्थिर रहती है अर्थात उस पर सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम लागू नहीं होता है।

2) इस संकल्पना की सर्वाधिक महत्वपूर्ण मान्यता यह है कि इसमें उपयोगिता को मापनीय माना गया है तथा उसे मापने के लिए मुद्रा- रूपी पैमाने का प्रयोग किया गया है।

3) उपभोग पर सीमांत उपयोगिता ह्रासमान नियम लागू हो रहा है , साथ ही किसी वस्तु के उपभोग में वृद्धि

होने पर उसकी सीमांत उपयोगिता में उत्तरोत्तर कमी होती जाती है।

4) उपभोक्ता की रुचियो,आदतों तथा समाज में प्रचलित फैशन में कोई परिवर्तन नहीं हो रहा है ।

* उपभोक्ता के अतिरेक की माप(measurement of Consumar's Surplus) :-

प्रोफेसर 'मार्शल' का विचार है कि किसी वस्तु के उपभोग से मिलने वाली उपयोगिता को मुद्रा द्वारा मापा जा सकता है अतः इसे भी मुद्रा के रूप में मापा जा सकता है इस प्रकार यह संकल्पना उपयोगिता के संख्यावाचक दृष्टिकोण पर आधारित है ।इसलिए उपयोगिता कि मापनीयता की परिधि में यदि हम किसी वस्तु की एक इकाई के उपभोग से प्राप्त होने वाली उपयोगिता में से उसकी कीमत को घटा दे तो उपभोक्ता का अतिरेक ज्ञात हो जाएगा। इसलिए मौद्रिक रूप में व्यक्त उपयोगिता वस्तु की उस कीमत को प्रदर्शित करती है जिसे उपभोक्ता वस्तु के उपभोग से वंचित रहने की अपेक्षा देने को तैयार रहता है ।अतः

संक्षेप में उपभोक्ता के अतिरेक मापन हेतु निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया जा सकता है:-

उपभोक्ता का अतिरेक= कीमत जो उपभोक्ता देने को तैयार है - कीमत जो उपभोक्ता वास्तव में देता है।